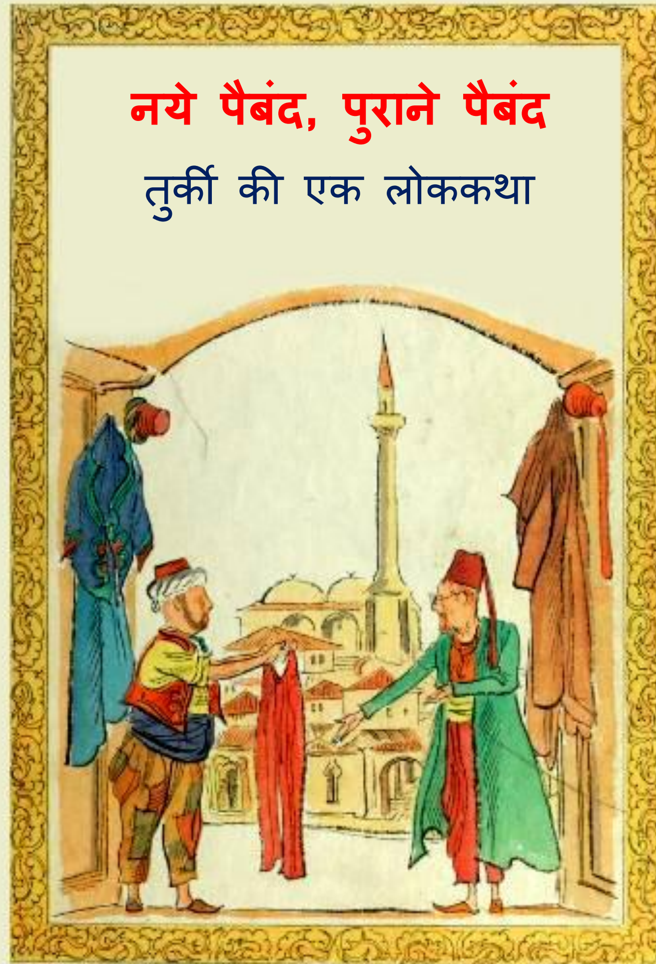
नये पैबंद, पुराने पैबंद

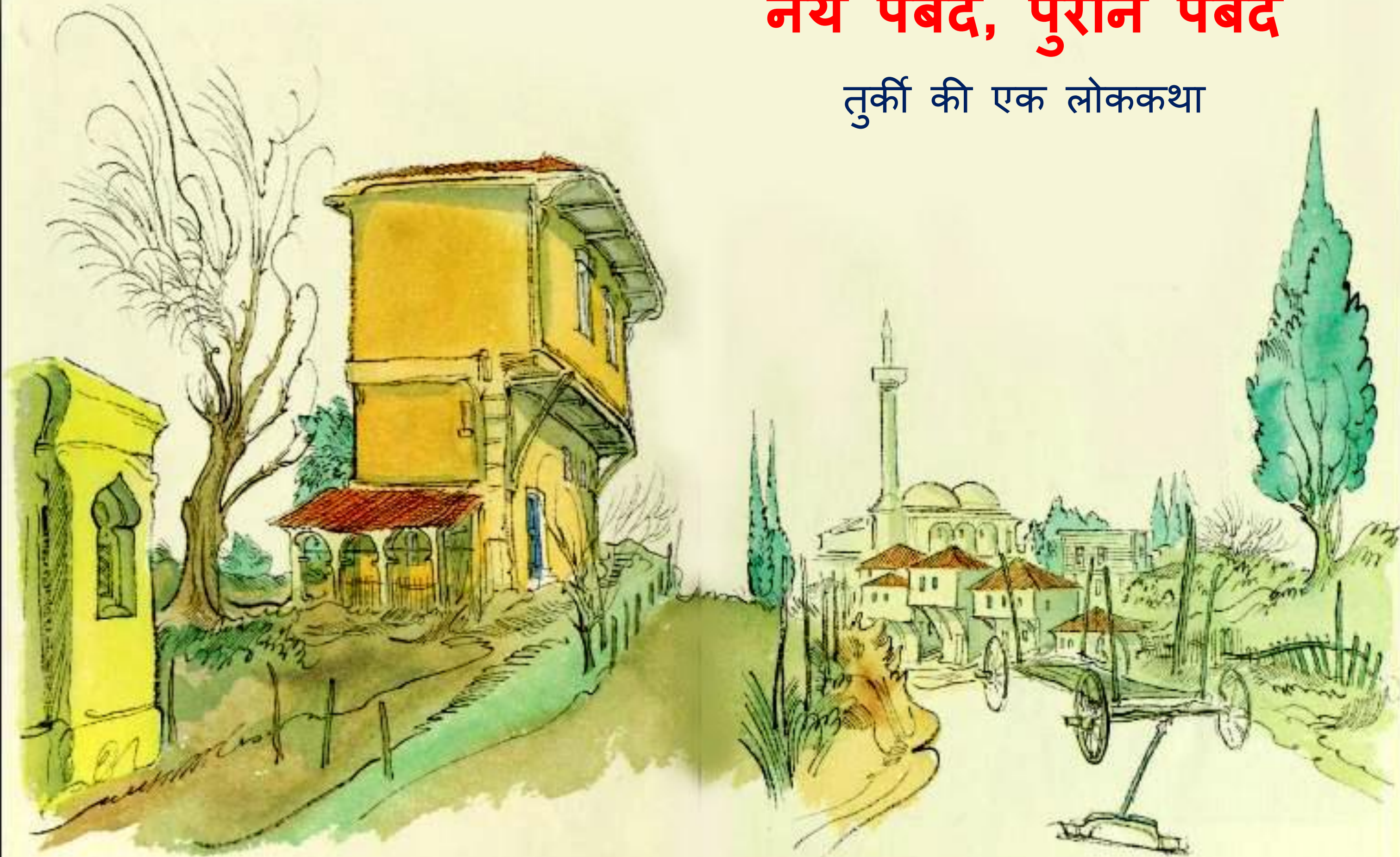
तुर्की की एक लोककथा

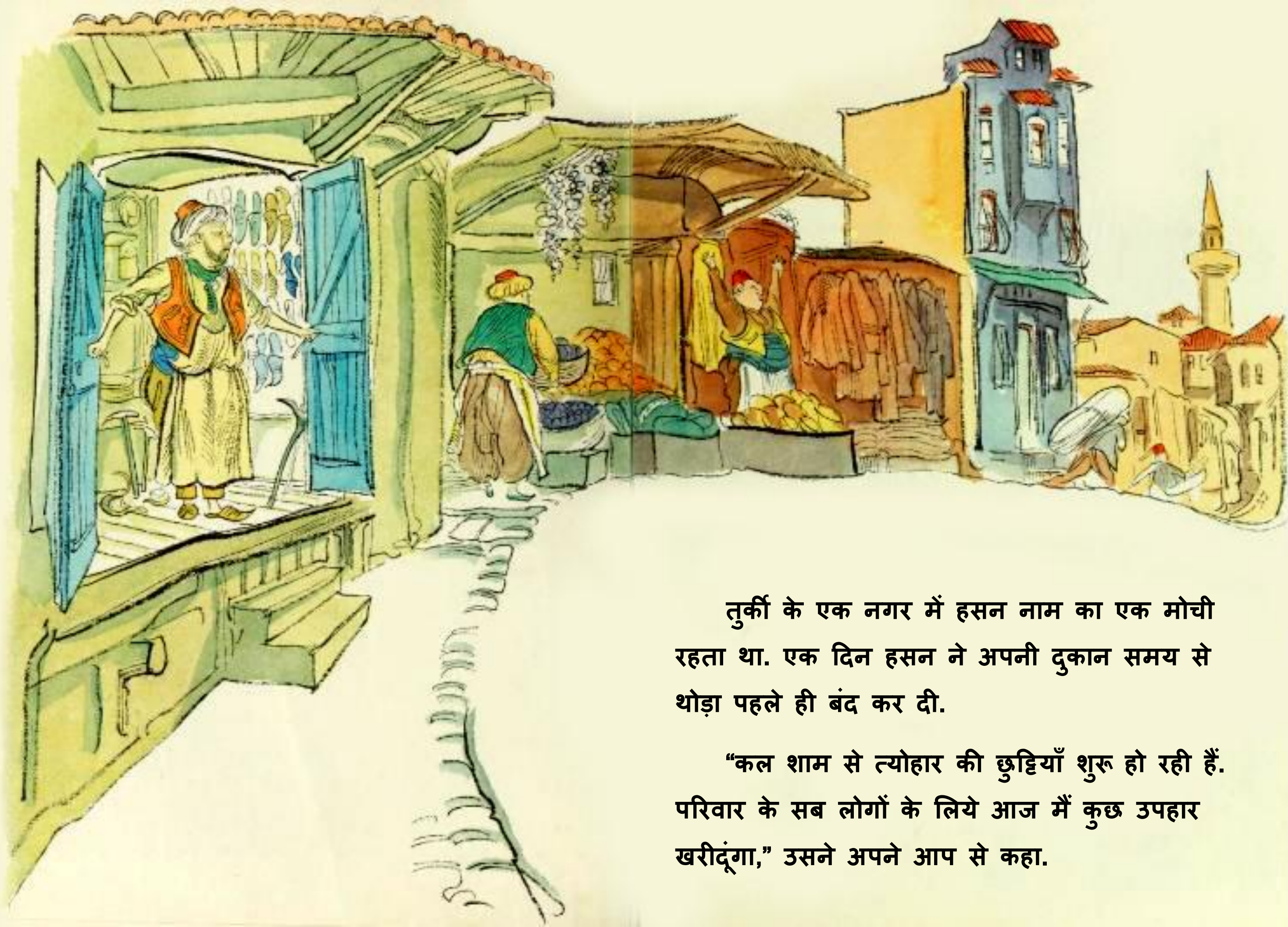




नये पैबंद, पुराने पैबंद

तुर्की की एक लोककथा





तुर्की के एक नगर में हसन नाम का एक मोची रहता था. एक दिन हसन ने अपनी दुकान समय से थोड़ा पहले ही बंद कर दी.

“कल शाम से त्योहार की छुट्टियाँ शुरू हो रही हैं. परिवार के सब लोगों के लिये आज मैं कुछ उपहार खरीदूंगा,” उसने अपने आप से कहा.



अपनी बीवी के लिये उसने एक कुरती खरीदी.

और अपनी विवाहित बेटी के लिये चार सुंदर चटकीले रिबन ख़रीदे.

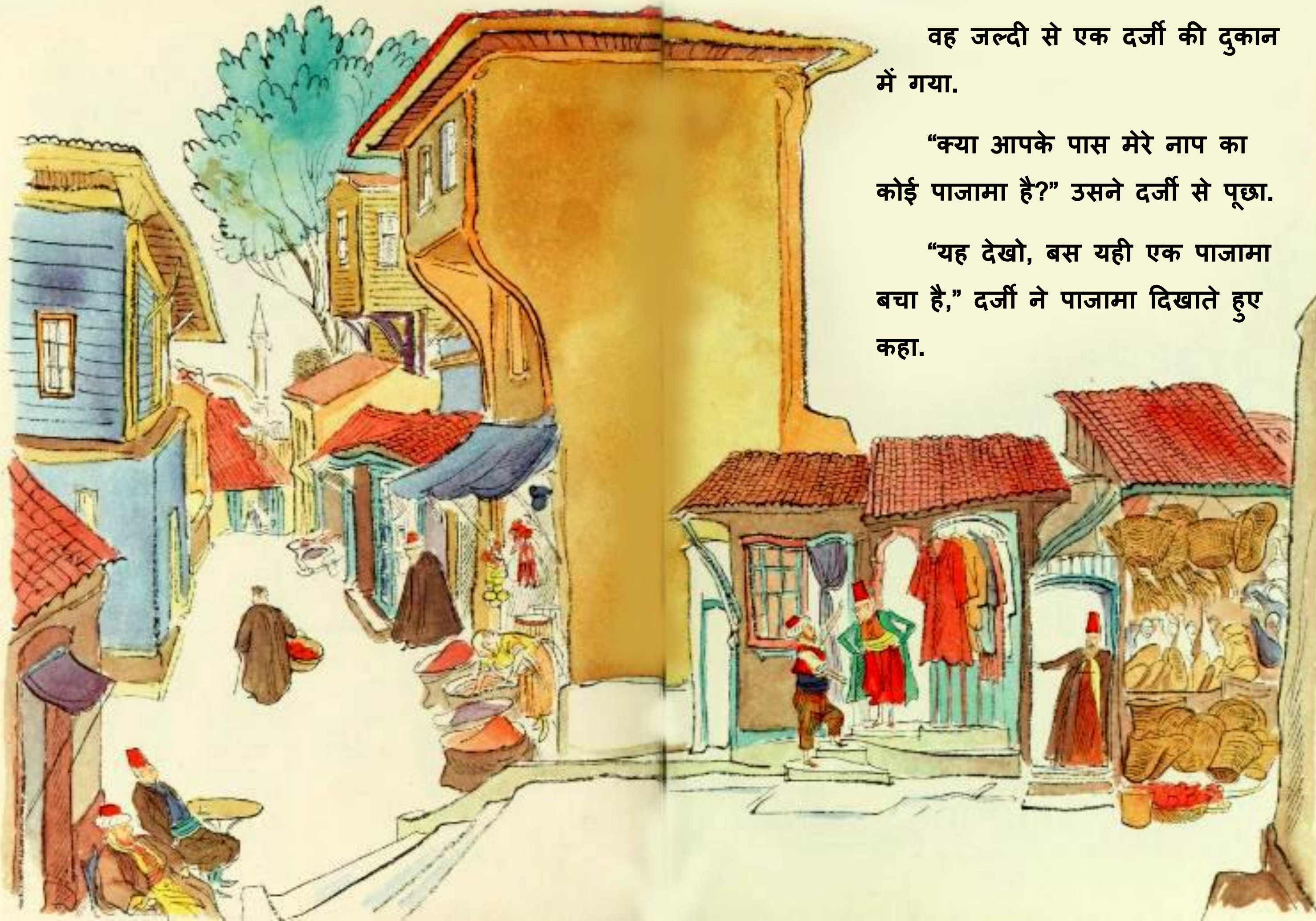


अपनी माँ के लिये उसने एक दुपट्टा ख़रीदा.



फिर उसने अपने कपड़ों की ओर देखा और धीमे से बुदबुदाया, “मुझे अपने लिये एक पाजामा लेना ही पड़ेगा. पुराने पाजामे के सूराखों पर इतने पैबंद लग गए हैं कि अब तो बस हर जगह पैबंद-ही-पैबंद दिखते हैं.”





वह जल्दी से एक दर्ज़ी की दुकान में गया.

“क्या आपके पास मेरे नाप का कोई पाजामा है?” उसने दर्ज़ी से पूछा.

“यह देखो, बस यही एक पाजामा बचा है,” दर्ज़ी ने पाजामा दिखाते हुए कहा.

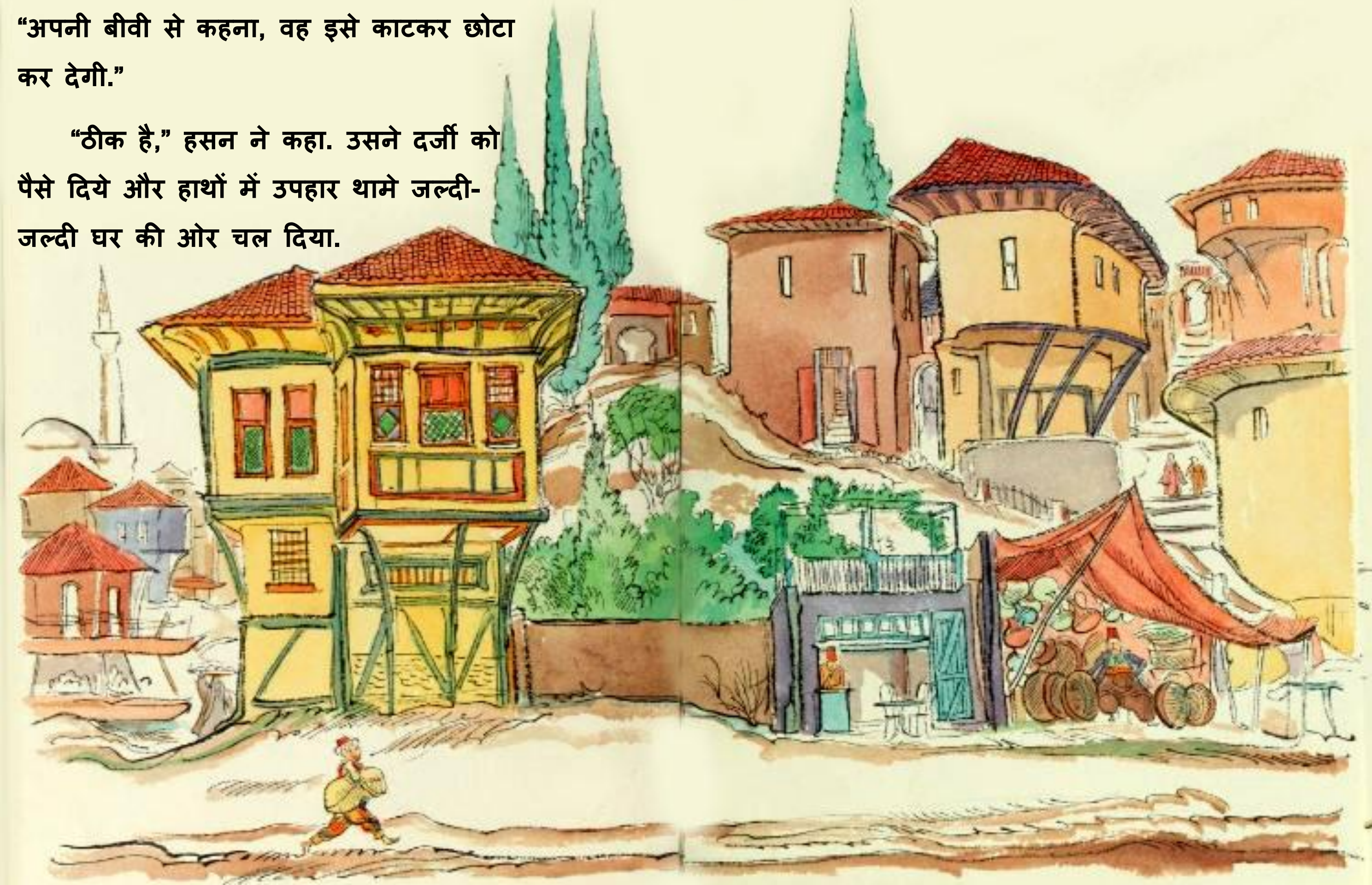


हसन ने अपने पाजामे के साथ नये पाजामे को नापा.

“नया पाजामा कमर पर तो बिलकुल सही है लेकिन इसकी लंबाई तीन अंगुल अधिक है. क्या आप इसकी लंबाई कम कर सकते हैं?” उसने दर्जी से पूछा.

“आज तो नहीं कर पाऊंगा,” दर्जी बोला, “अपनी बीवी से कहना, वह इसे काटकर छोटा कर देगी.”

“ठीक है,” हसन ने कहा. उसने दर्जी को पैसे दिये और हाथों में उपहार थामे जल्दी-जल्दी घर की ओर चल दिया.





उसकी बीवी को अपनी कुरती बहुत पसंद आई.

“कितनी सुंदर है यह कुरती!” बीवी ने कहा, “क्या तुमने अपने लिये कुछ खरीदा?”

“मैंने एक पाजामा लिया है,” हसन ने कहा, “लेकिन पाजामा तीन अंगुल अधिक लंबा है. क्या तुम उसे काटकर छोटा कर दोगी?”

“अभी नहीं,” बीवी ने कहा, “अभी तो मैं अपनी नई कुरती पर चमकीले सितारें लगाऊंगी. तुम माँ से क्यों नहीं कहते? वह हर काम बड़े सलीके से करती हैं.”

“ठीक है,” हसन ने कहा और माँ के घर आया.

“माँ,” उसने कहा, “मैं तुम्हारे लिये एक नया दुपट्टा लाया हूँ.”

“कितना सुंदर है यह दुपट्टा!” माँ ने कहा, “तुमने अपने लिये क्या लिया?”

“यह पाजामा लाया हूँ,” हसन बोला,” “पर यह थोड़ा लंबा है. ज़रा इसे तीन अंगुल काटकर छोटा कर दो.”





“बेटा, सिलाई करने के लिये मेरे पास आज बिल्कुल वक्त नहीं है. कल से त्योहार की छुट्टियाँ शुरू हो रही हैं. मुझे गुज़रे हुए रिश्तेदारों के लिए प्रार्थना भी करनी है. तुम अपनी बेटी से क्यों नहीं कहते? उसे भी तो कुछ काम करना चाहिए.”

“ठीक है,” हसन ने कहा और फिर वो अपनी बेटी के घर की ओर चल दिया.

“बिटिया,” उसने कहा, “मैं तुम्हारे लिये कुछ रिबन लाया हूँ.”

“कितने सुंदर हैं यह रिबन!” बेटी ने खुशी से कहा, “आपने अपने लिये क्या लिया, अब्बा?”

“मैंने एक पाजामा खरीदा है,” वह बोला, “लेकिन लंबाई में यह तीन अंगुल बड़ा है. क्या तुम इसे छोटा कर सकती हो?”



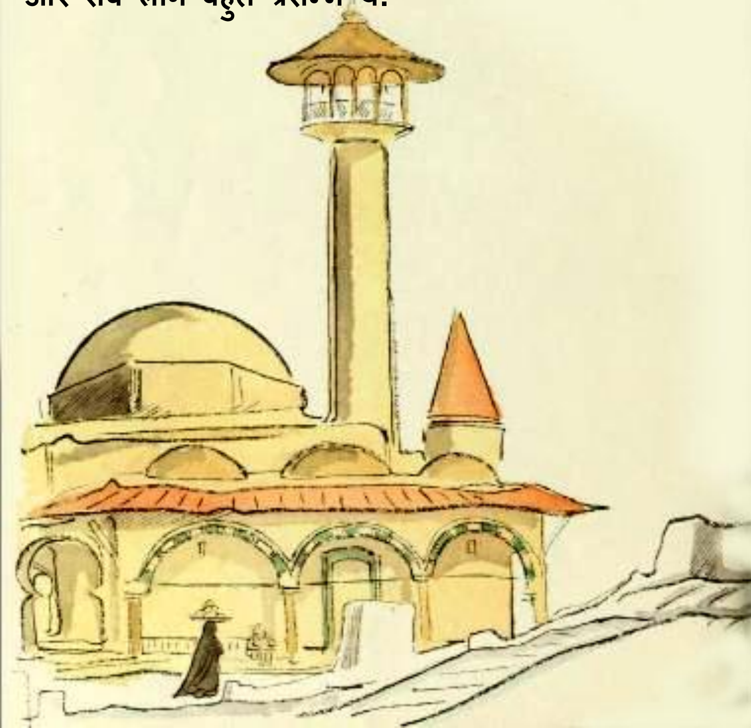
"ओह....अब्बा, मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगी," बेटी ने कहा, "अभी मुझे अपने बच्चे को दूध पिलाना है. फिर मैं इन रिबनों को ईस्तरी करूंगी. पाजामे को छोटा करने के लिये आप माँ या दादी को क्यों नहीं कहते? वह अवश्य इसे छोटा कर देंगी."

हसन घर लौट आया और सोचने लगा. वह देर तक सोचता रहा. फिर वह झटपट अपनी दुकान की ओर चल पड़ा. वहां पहुँच, उसने बड़े ध्यान से पाजामे को नीचे से तीन अंगुल के बराबर काट दिया. फिर जूता सिलने वाली सूई से पाजामे के किनारे सिल दिए.

पाजामे को तह कर उसने अपने बाज़ू पर लटका लिया और घर वापस आ गया. घर लौटकर अपने कमरे की अलमारी में नया पाजामा तह करके उसने रख दिया.

अगली दोपहर भी उसने अपनी दुकान जल्दी बंद कर दी. फिर टहलता हुआ वह घर की ओर चल पड़ा.

रास्ते में जो कोई मिला, उसको देखकर हसन मुस्कराया या फिर सर हिलाकर उसने उसका अभिवादन किया. त्योहार की छुट्टियां शुरू हो रहीं थीं और सब लोग बहुत प्रसन्न थे.





घर के दरवाज़े पर ही उसकी बीवी मिली, “भीतर आओ, तुम्हारी माँ और बेटी भी यहीं हैं.”

हसन को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसकी माँ और बेटी भी दरवाज़े पर ही उसकी प्रतीक्षा कर रहीं थीं.

हसन की माँ अपने नये दुपट्टे में बहुत अच्छी लग रही थी.

“बेटा, तुम्हारे तैयार होते ही हम सब मेला देखने जायेंगे,” इतना कह कर माँ ऐसे मुस्कराई जैसे वह कोई बात उससे छिपा रही थी.

“मियाँ, जल्दी तैयार हो जाओ,” बीवी बोली, “आज अपना नया पाजामा पहनना. देखो, मैंने भी नई कुरती पहन ली है.” वह भी मंद-मंद हंस रही थी जैसे वह भी कुछ छिपा रही थी.



“और अब्बा, तैयार होने में ज्यादा समय मत लगाना,” बेटी ने अनुरोध किया. उसने नये रिबन अपने बालों में बाँधे थे और वह बहुत सुंदर लग रही थी. वह भी ऐसे मुस्कराई जैसे वह भी कुछ छिपा रही थी.

“अहा, यह तीनों कितनी अच्छी लग रही हैं,” हसन ने सोचा, “क्या हुआ अगर मेरा पाजामा छोटा करने के लिये इनके पास समय न था? इनको मेले में ले जाकर कितनी खुशी मिलेगी.”

वह अपने कमरे में गया, अपना नया पाजामा पहनने के लिए. पाजामे का घेरा तो पहले ही सही था, अब लंबाई भी ठीक हो गई थी, उसने स्वयं ही तो काटकर उसकी लंबाई कम की थी.

अचानक.

“ओ...हो, यह क्या हो गया,” हसन चिल्लाया.

“क्या हुआ? क्या चोट लग गई?” बीवी ने घबरा कर पूछा.

“न......हीं नहीं, लेकिन मेरे पाजामे को कुछ हो गया है.” उसने दरवाज़ा खोला. बाहर आया और सबको अपना नया पाजामा दिखाया.



उसका नया, सुंदर पाजामा सिर्फ उसके घुटनों तक ही लंबा था.



उसकी माँ, बीवी और बेटी एक साथ बोलीं, “लेकिन मैंने तो पाजामा सिर्फ तीन अंगुल के बराबर ही काटा था.”

अचानक तीनों को समझ आ गया कि क्या हुआ था. तीनों एकटक हसन को देखने लगीं.



बेचारा हसन भी उन तीनों को एकटक देख रहा था. वह इतना हैरान था कि एक शब्द भी न बोल पाया.



“मियाँ,” बीवी ने धीमे से कहा, “कल शाम जब तुम अपने दोस्त से मिलने गए थे तब मुझे तुम्हारे पाजामे का ध्यान आया. ‘वह कितना अच्छा पति है’ मैंने अपने आप से कहा, ‘उसके लौटने से पहले ही मैं उसका पाजामा छोटा कर दूंगी.’ मैंने पाजामा अलमारी से निकाला. मैंने देखा कि पाजामे के किनारे बड़े भद्दे ढंग से सिले थे. मैंने नाप कर पाजामा तीन अंगुल काटा और फिर अच्छे से सिलाई कर दी. फिर वापस अलमारी में रख दिया.”



हसन की माँ पछतावे के साथ बोली, “आज सुबह जब तुम्हारी बीवी सामान लेने बाज़ार गई थी उस समय मैं यहाँ आई. मैं अपनी प्रार्थना पूरी कर चुकी थी. मैंने अपने आप से कहा, ‘हसन इतना अच्छा बेटा है, मैं अभी उसका पाजामा ठीक कर दूँगी.’ मैंने पाजामा अलमारी से ढूंढ निकाला, तीन अंगुल के बराबर उसे नीचे से काटा, फिर उसके किनारों पर सिलाई की और तह करके अलमारी में रख दिया. मैं तुम्हें हैरत में डालना चाहती थी.”





अब बेटी की बारी थी, “अब्बा, आज सुबह मैं अपने बच्चे को पालने में झुला रही थी कि मुझे आपके पाजामे का ध्यान आया. ‘मेरे अब्बा कितने अच्छे हैं,’ मैंने अपने आप से कहा, ‘मुझे उनका पाजामा छोटा करना ही होगा.’ बस मैंने बच्चे को गोद में उठाया और झटपट यहाँ आ गई. मैंने अलमारी में से पाजामा निकाला, उसके किनारे सीधे किये और नीचे से तीन अंगुल के बराबर काटा.”

“फिर अच्छे से सिलाई कर, उसे अलमारी में रख दिया. बच्चे को लेकर मैं अपने घर चली गई. मैंने किसी को बताया नहीं क्योंकि मैं आपको चौंकाना चाहती थी.”



हसन ने एक से दूसरे को, फिर दूसरे से तीसरे को घूरकर देखा. फिर वह खूब ज़ोर से हंस पडा. “परन्तु मैंने तो पहले ही काट कर इस पाजामे को छोटा कर दिया था,”

“तुमने?” तीनों औरतें एक साथ चिल्लाईं.

“हाँ, किसी को तो इस पाजामे को छोटा करना ही था. इसलिये मैंने कल इसे तीन अंगुल काट कर सिल दिया था.”





वह सब ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे. हँसते-हँसते सोचने लगे की अब क्या किया जा सकता था. उन्होंने सोचा कि क्यों न पाजामे के कटे हुए टुकड़े फिर से पाजामे के साथ जोड़कर सिल दिये जाएँ.

जब सारे टुकड़े फिर से पाजामे के साथ जोड़ दिये गये तो, अल्लाह की मेहरबानी से, पाजामे की लंबाई उतनी ही हो गई जितनी कि होनी चाहिए थी.





"अब सब देखो, मेरे पाजामे पर लगे सब पैबंद बिल्कुल नये हैं," हसन ने ज़ोर से कहा और फिर खिलखिलाकर हंस दिया.

नये, सुंदर कपड़े पहनकर वह सब मेला देखने चले गये.



